वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 398
ISBN-978-93-82071-84-6

श्री पुष्पदंतनाथ विधान

–रचयित्री–

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

जैनशासन के नवमें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि
काकंदी (उ.प्र.) में भगवान के जन्मकल्याणक महोत्सव-
मगसिर शु. एकम् (3 दिसम्बर 2013) के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com Facebook : jaintirthjambudweep

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	मगसिर शु. एकम्, 3 दिसम्बर 2013	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी

ॐ नमो मंगलं कुर्यात् , ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

वर्तमान में सभी मनुष्यों का जीवन मंगलमयी हो, इसके लिए देवदर्शन, भगवान का अभिषेक, पूजन, भगवान की भक्ति, मण्डल विधानों का आयोजन मंगल साधन हैं। जिनेन्द्र देव की भक्ति, स्तुति कर्मनिर्जरा में विशेष कारण है। भक्त भगवान की भक्ति करते–करते एक दिन स्वयं भगवान बन जाता है। पूज्य माताजी हमेशा अपने प्रवचनों में कहती हैं प्रत्येक प्राणी की आत्मा भगवान आत्मा है। जैसे दूध में घी विद्यमान है वैसे ही प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर, आर्यिका ज्ञानमती नाम को पाकर, पूरे विश्व में ज्ञान का अलख जगाने वाली पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

इनकी लेखनी से लिखा गया एक–एक शब्द मोती की माला के समान है। 365 दिनों में प्रायः सभी जगह पूज्य माताजी द्वारा रचित इन्द्रध्वज, शान्ति-विधान आदि होते ही रहते हैं।

यह 'पुष्पदंतनाथ विधान' सभी के जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि को प्रदान करे, यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु को प्राप्त करें। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला-जहाँ से लाखों की संख्या में ग्रंथ का प्रकाशन हो चुका है, आगे भी दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करे, यही मंगल कामना है।

प्रस्तावना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

पूजा विधानों की श्रृंखला में यह श्री पुष्पदंतनाथ मण्डल विधान पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने रचकर नूतन कृति हमें प्रदान किया है। जिस प्रकार से शान्तिविधान को लोग एक दिन में सम्पन्न करके भगवान शान्तिनाथ की आराधना कर लेते हैं, जिससे अनेक अघटित घटनाओं के संकट से उनकी रक्षा हो जाती है, उसी प्रकार 9 वें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंत भगवान की भक्ति में यह विधान भी आप एक दिन में ही सम्पन्न कर सकते हैं और फिर स्वयं अनुभव आएगा कि किस प्रकार से आपके मनोरथ सिद्ध होते हैं।

पूज्य माताजी जी ने 24 तीर्थंकरों के पृथक्–पृथक् विधानों की रचना की है जिसमें कुछ विधान प्रकाशित हैं और कुछ अप्रकाशित हैं। 24 तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियाँ हैं। जिनमें से नवमें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंत की जन्मभूमि 'काकन्दी' तीर्थक्षेत्र है, जो कि काफी समय से उपेक्षित थी। पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से सन् 2010 में उस तीर्थ पर नूतन जिनमंदिर का निर्माण हुआ एवं भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ। अब उस तीर्थ पर यात्रियों का आवागमन खूब हो रहा है। उस उपेक्षित जन्मभूमि का परिचय सभी भक्तों को प्राप्त हो रहा है।

पूज्य माताजी ने इस विधान को मंगलाचरण से शुभारम्भ करते हुए श्री पुष्पदंतनाथ स्तोत्र दिया है जिसमें उनका पूरा जीवनवृत्त समाहित है–

काकन्दी में सुग्रीव पिता, माता जयरामा जग पूजित।
फाल्गुनवदि नवमी के दिन प्रभु, गर्भावतरण मंगल मंडित।।
मगसिर शुक्ला प्रतिपद तिथि थी, जब जन्में थे भगवान यहाँ।
उन पुष्पदंत की दिव्य कथा, हरती है भवभय त्रास महा।।

इस विधान में 3 पूजा है। सर्वप्रथम अर्हन्तदेव की पूजा है, उसके बाद भगवान पुष्पदंतनाथ की पूजा है जिसमें पंचकल्याणक के अर्घ्य एवं 108 अर्घ्य हैं उसके बाद पूर्णार्घ्य एवं जयमाला है। जयमाला के बाद इत्याशीर्वादः के श्लोक में पूज्य माताजी ने लिखा है–

श्री पुष्पदंत जिनवर विधान, जो भक्तिभाव से करते हैं।
वे रोग शोक दुःख संकटहर, नित सुख संपत्ती लभते हैं।।
क्रम से स्वर्गों के सौख्य पाय, निज आत्म सुधारस चखते हैं।
कैवल्य ज्ञानमति किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।1।।

जो भव्यजीव इस विधान को भक्तिभावपूर्वक करते हैं वे रोग, शोक, दुःख, संकट आदि को दूरकर सुख, सम्पत्ति को प्राप्त करते हैं और क्रम से एक दिन स्वर्ग, मोक्ष के सुखों को भी प्राप्त कर लेते हैं।

विधान की जयमाला के बाद बड़ी जयमाला है उसके बाद प्रशस्ति है। प्रशस्ति के बाद मेरे द्वारा रचित काकन्दी तीर्थक्षेत्र की पूजा है। जिसमें काकंदी तीर्थक्षेत्र के 4 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य एवं 1 जयमाला है। यह लघु विधान करने, कराने वालों के जीवन में सुख, शान्ति के साथ-साथ मनवांछित कार्य की सिद्धि करें, यही मंगल भावना है।

दो शब्द

-आर्यिका सुव्रतमती

त्रैलोक्येशः पुष्पदंतो महेशः, काकंदी पूःजन्मतस्ते पवित्रा।
सुग्रीवस्त्वज्जन्मदाता बभूव, देवेंद्राद्यैस्त्वं नुतः साधुभिश्च।।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य चारित्रचन्द्रिका, आर्यिकाशिरोमणि, युगप्रवर्तिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 24 तीर्थंकरों-भगवन्तों की भक्ति में पृथक्-पृथक् चौबीस तीर्थंकरों की हिन्दी में स्तुति, संस्कृत में स्तुति लिखी है जो कि जिनस्तोत्र संग्रह पुस्तक में प्रकाशित है। इसके साथ ही चौबीसों तीर्थंकरों की पृथक्-पृथक् पूजा बनाई है जो कि जम्बूद्वीप पूजांजलि में प्रकाशित है। एवं चौबीसी विधान भी अलग से छप चुका है। आगे अब पूज्य माताजी ने चौबीस तीर्थंकरों के पृथक्-पृथक् विधान की भी रचना कर दी है। जिसमें से ये पुष्पदंतनाथ भगवान का मण्डल विधान आपके हाथों में करने के लिए आ रहा है।

पूज्य माताजी की वाणी जिनवाणी है। लेखनी में सरस्वती का वास है। 300 ग्रंथों की लेखिका, रचयित्री, क्वाँरी कन्याओं की पथप्रदर्शिका, वर्तमान में सबसे प्राचीन दीक्षित, जिनागम का सार बताने वाली, ज्ञानामृत का वितरण करने वाली, षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ पर संस्कृत में सिद्धान्त चिन्तामणि टीका की 16 पुस्तकों की रचना करने वाली, अष्टसहस्री का हिन्दी अनुवाद करने वाली, इन्द्रध्वज, सर्वतोभद्र, कल्पद्रुम, सिद्धचक्र, तीनलोक, तेरहद्वीप आदि विधानों की रचना करने वाली पूज्य माताजी इस युग के लिए एक वरदान है।

वर्तमान में पारस चैनल के माध्यम से प्रतिदिन लाखों की संख्या में लोग पूज्य माताजी का प्रवचन सुनते हैं और जब वे हस्तिनापुर आते हैं तो वे पूज्य माताजी का दर्शन कर अपने को धन्य-धन्य मानते हैं। वे कहते हैं हमने आज साक्षात् सरस्वती माता का दर्शन कर अपने जीवन को धन्य कर लिया।

इस विधान की प्रूफरीडिंग के माध्यम से मुझे जो स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ है, वह भव-भव भ्रमण को दूर करें और शीघ्र ही मुझे श्रुतज्ञान, केवलज्ञान की प्राप्ति हों, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषय-दर्पण

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाचरण	1
2.	श्री पुष्पदंतनाथ स्तोत्र	2
3.	श्री अर्हंत पूजा	3
4.	भगवान श्री पुष्पदंतनाथ जिनपूजा	8
5.	बड़ी जयमाला	27
6.	प्रशस्ति	30
7.	काकंदी तीर्थ पूजा	31
8.	पुष्पदंतनाथ भगवान की आरती	38
9.	काकंदी तीर्थक्षेत्र की मंगल आरती	39
10.	भजन	40

मण्डल का नक्शा

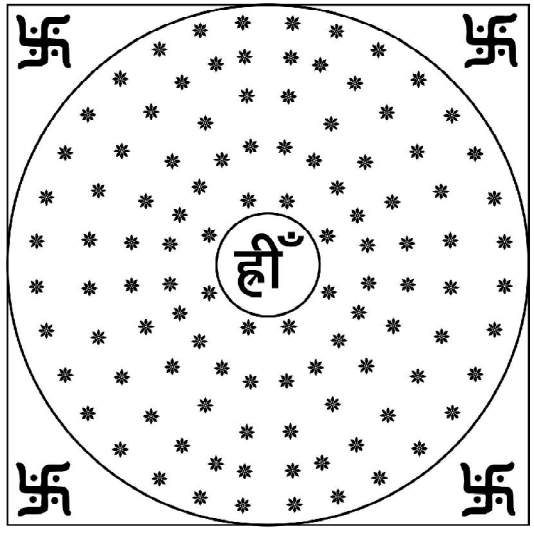

कुल – 108 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य, 3 जयमाला, 1 बड़ी जयमाला

श्री पुष्पदंतनाथ विधान

मंगलाचरण

पुष्यन्ति भव्यास्तव नाममंत्रैः, तुष्यन्ति नित्यं गुणकीर्तनेन।
पुष्यान्मनो मे जिनपुष्पदंतः, त्वां भक्ति पुष्पांजलिनार्चयामि।।1।।

श्रीमुखालोकनादेव श्रीमुखालोकनं भवेत्।
आलोकनविहीनस्य तत्सुखावाप्तयः कुतः।।2।।

अद्याभवत् सफलता नयनद्वयस्य, देव! त्वदीयचरणाम्बुजवीक्षणेन।
अद्य त्रिलोकतिलक! प्रतिभासते मे, संसारवारिधिरयं चुलुकप्रमाणम् 3।।

अद्य मे क्षालितं गात्रं नेत्रे च विमलीकृते।
स्नातोऽहं धर्मतीर्थेषु जिनेन्द्र तव दर्शनात्।।4।।

नमो नमः सत्त्वहितंकराय, वीराय भव्याम्बुजभास्कराय।
अनन्तलोकाय सुरार्चिताय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय।।5।।

श्रीमुख के अवलोकन से, श्रीमुख का अवलोकन होता।
अवलोकन से रहित जनों को, वह सुख प्राप्त कहाँ होता।।1।।

हे भगवन् ! मम नेत्र युगल शुचि, सफल हुए हैं आज अहो।
तव चरणांबुज का दर्शन कर, जन्म सफल है आज अहो।।
हे त्रैलोक्य तिलक जिन! तव, दर्शन से प्रतिभासित होता।
यह संसार वार्धि चुल्लुक, जलसम हो गया अहो ऐसा।।2।।

आज पवित्र हुआ तनु मेरा, नेत्र युगल भी विमल हुए।
धर्मतीर्थ में मैं स्नान, किया जिनवर! तव दर्श किए।।3।।

नमो नमो हे सत्त्वहितंकर! भव्यकमलभास्कर हे ईश।
अनंत लोकपति सुर अर्चित जिन, नमूँ सुराधिप देव हमेश।।4।।

श्री पुष्पदंतनाथ स्तोत्र

त्रैलोक्यपति देवेन्द्र नमित, साधूगण वंद्य सदा जिनवर।
सुख आत्माधीन अचल तव है, स्थान भ्रमण विरहित सुस्थिर।।
तव कीर्तिलता त्रिभुवन व्यापी, औ सिद्धि रमा तव चरणरता।
तव दिव्यसुधावच भव जलधि, से तिरने को उत्तम नौका।।5।।

काकंदी में सुग्रीव पिता, माता जयरामा जग पूजित।
फाल्गुनवदि नवमी के दिन प्रभु, गर्भावतरण मंगल मंडित।।
मगसिर शुक्ला प्रतिपद तिथि थी, जब जन्में थे भगवान यहां।
उन पुष्पदन्त की दिव्यकथा, हरती है भवमय त्रास महा।।6।।

मगसिर सुदि एकम के प्रभु ने, जिनमुद्रा धर मोहारि हना।
कार्तिक सुदि दूज दिवस केवल-लक्ष्मी ने आन लिया शरणा।।
भादों सुदि अष्टमि के दिन प्रभु, सम्मेदाचल से सिद्ध हुए।
सुखस्वात्मसुधारस पान तृप्त, त्रिभुवन के अग्र विराज गये।।7।।

चउशतकर तुंग मकर लाँछन, दो लाख वर्ष पूर्वायु कही।
शशिकांत देह भी पुष्पदंत! अंतक के अन्तक तुम्हीं सही।।
निश्चय व्यवहार रत्नत्रय से, भूषित शिवकांता वरण किया।
मेरे भी उभय रत्नत्रय को, बस पूर्ण करों मैं शरण लिया।।8।।

।।अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

पूजा नं. 1

श्री अर्हंत पूजा

स्थापना–गीता छंद

अरिहंत प्रभु ने घातिया को घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह दोष का सब क्षय किया।।
शत इंद्र नित पूजें उन्हें गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना के हेतु अभिनन्दन करें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–बसन्ततिलका छंद–

श्रीमज्जिनेंद्र पद में जलधार देऊं।
आतंकपंक जग का सब दूर होवे।।
इच्छानुसार फलदायक कल्पतरू ये।
पूजा जिनेन्द्रप्रभु की त्रय ताप नाशे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं निर्वपामीति स्वाहा।)

काश्मीरि केशर सुचंदन को घिसाऊँ।
चर्चूं जिनेन्द्र पदपंकज में रुचि से।।
संसार के सकल ताप विनाश करती।
पूजा जिनेन्द्र प्रभु की सब सौख्य देती।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमात्मकेभ्यः चंदनं ... ।

जो कुंदपुष्प कलियों सम दीखते हैं।
धोये सु तंदुल लिये भर थाल में हैं।।
अर्हंत सन्मुख रखूँ बहु पुंज नीके।
पाथेय मोक्षपथ में जन के लिये हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनादिनिधनेभ्यः अक्षतं ... ।

मल्ली गुलाब वर पुष्प सुगंधि करते।
अर्हंत के चरण में रुचि से चढ़ाऊँ।।
पापान्धकूप मधि डूब रहे जनों को।
उद्धार हेतु जिनपूजन ही जगत् में।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः पुष्पं ... ।

शालीय ओदन सुगंधित भोज्यवस्तु।
पीयूष तुल्य चरू लेकर थाल भरके।।
अर्हंत सन्मुख चढ़ा क्षुध व्याधि नाशूँ।
तृप्ती अनंत जिनपूजन से मिलेगी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतज्ञानेभ्यः नैवेद्यं ... ।

जो चित्त का तमसमूह विनाश करके।
त्रैलोक्यगेह वर दीपक दीप ज्योति।।
ले दीप आरति करूँ वरज्ञानज्योति।
पाऊँ अनंत निजज्ञान विकास करके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतदर्शनेभ्यः दीपं ... ।

जो धूप सुन्दर सुगंध बिखेरती है।
अग्नि विषे जलत धूम्र उड़ावती है।।
खेऊँ दशांगवर धूप जिनेन्द्र आगे।
संपूर्ण पाप जलते वर सौख्य होगा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतवीर्येभ्यः धूपं ... ।

ये कल्पवृक्ष फल सम अति मिष्ट ताजे।
अमृत समान रस से परिपूर्ण दीखें।।
पूजा करूँ फल चढ़ाकर आपकी मैं।
स्वात्मैक सिद्धि फल प्राप्त करूँ इसी से।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतसौख्येभ्यः फलं ... ।

नीरादि आठ वर द्रव्य संजोय करके।
घंटा ध्वजा चंवर छत्र सुदर्पणादी।।

मांगल्य द्रव्य शुभ लेकर पूजते ही।
संपूर्ण मंगल मिले निज सौख्य पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परममंगलेभ्यः अर्घ्यं ... ।

श्रीपूज्यपाद जिन के चरणाब्ज नमते।
संपूर्ण इंद्र शिर से अतिभक्ति भावे।।
श्री पूज्य के पदनिकट जलधार देते।
हो शांति लोक त्रय में मुझ भक्त को भी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निष्पादयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा।

(शांतिधारा करें)

जो इन्द्र भक्ति वश नेत्र हजार करके।
बारह हजार कर तांडव नृत्य करता।।
ऐसे जिनेन्द्रपद पुष्प चढ़ाय करके।
पूजा त्रिकाल कर अनुपम सौख्य पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः ध्यातृभिः अभीप्सितफलेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि चढ़ावें)

जयमाला

–दोहा–

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

–शम्भु छंद–

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवसरण में राज रहे।
जय जय अर्हंत् लक्ष्मी पाकर, निज आत्मा में ही आप रहे।।
जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पयसम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।2।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु हैं, शुभ लक्षण सहस आठ सौ हैं।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जन मनमोहें।।

केवल रवि प्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानों।
चारों दिश इक-इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।3।।

हो गगन गमन, नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखें सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।4।।

सर्वार्ध मागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल औ फूल खिलें, दर्पणवत् भूरत्नाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानंद भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।5।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहु धान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसुमंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।6।।

तरुवर अशोक सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि, चौंसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।7।।

क्षुध तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चऊ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभु सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।8।।

मैं भी भवदुःख से घबड़ा कर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।
संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधी पूर्वक हो।
हो केवल 'ज्ञानमती' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।9।।

–दोहा–

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमो नमो अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।10।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला महार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–शम्भु छंद–

अरिहंत जिनेश्वर की अर्चा, जो भक्तिभाव से करते हैं।
वे रोग शोक दुःख संकटहर, नित सुख संपत्ती लभते हैं।।
क्रम से स्वर्गों के सौख्य पाय, निज आत्म सुधारस चखते हैं।
कैवल्य ज्ञानमति किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. 2
भगवान श्री पुष्पदंतनाथ जिनपूजा

–अथ स्थापना (गीता छंद) –

श्री पुष्पदंतनाथ जिनेन्द्र त्रिभुवन, अग्र पर तिष्ठें सदा।
तीर्थेश नवमें सिद्ध हैं, शतइन्द्र पूजें सर्वदा।।
चउज्ञानधारी गणपती, प्रभु आपके गुण गावते।
आह्वान कर पूजें यहाँ, प्रभु भक्ति से शिर नावते।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक (नरेन्द्र छंद) –

सरयू नदि का शीतल जल ले, जिनपद धार करूँ मैं।
साम्य सुधारस शीतल पीकर, भव भव त्रास हरूँ मैं।।
पुष्पदंत जिन पद पंकज को, पूजत निज सुख पाऊँ।
इष्ट वियोग अनिष्ट योग के, सब दुख शीघ्र नशाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

काश्मीरी केशर चंदन घिस, जिनपद में चर्चूं मैं।
मानस तनु आगंतुक त्रयविध, ताप हरो अर्चूं मैं।।पुष्प.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्ज्वल अक्षत से, प्रभु ढिग पुंज चढ़ाऊँ।
निज गुणमणि को प्रगटित करके, फेर न भव में आऊँ।।पुष्प.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही मोगरा सेवंती, वासंती पुष्प चढ़ाऊँ।
कामदेव को भस्मसात् कर, आतम सौख्य बढ़ाऊँ।।पुष्प.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर फेनी लड्डू पेड़ा, रसगुल्ला भर थाली।
तुम्हें चढ़ाऊँ क्षुधा नाश हो, भरे मनोरथ खाली।।पुष्प.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णदीप में ज्योति जलाऊँ, करूँ आरती रुचि से।
मोह अंधेरा दूर भगे सब, ज्ञान भारती प्रगटे।।पुष्प.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला चंदन कर्पूरादिक, मिश्रित धूप सुगंधी।
जिन सन्मुख अग्नी में खेऊँ, धूम उड़े दिश अंधी।।पुष्प.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आडू लीची सेव संतरा, आम अनार चढ़ाऊँ।
सरस मधुर फल पाने हेतू, शत शत शीश झुकाऊँ।।पुष्प.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अर्घ्य बनाकर, सुवरण पुष्प मिलाऊँ।
केवल ज्ञानमती हेतू मैं, प्रभु को अर्घ्य चढ़ाऊँ।।पुष्प.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

यमुना सरिता नीर, प्रभु चरणों धारा करूँ।
मिले निजात्म समीर, शांतीधारा शं करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित खिले सरोज, जिन चरणों अर्पण करूँ।
निर्मद करूँ मनोज, पाऊँ जिनगुण संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–रोला छंद –

प्राणत स्वर्ग विहाय, काकंदीपुर आये।
इंद्र सभी हर्षाय, गर्भकल्याण मनाये।।

पिता कहे सुग्रीव, जयरामा जगमाता।
नवमी फागुन कृष्ण, जजत मिले सुखसाता।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णानवम्यां श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर एकम शुक्ल, जन्म लिया तीर्थंकर।
रुचकवासिनी देवि, जातकर्म में तत्पर।।
शची प्रभू को गोद, ले स्त्रीलिंग छेदा।
जन्म महोत्सव देव, करके भव दुख भेदा।।2।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदायां श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्का गिरते देख, प्रभु विरक्त अपराण्हे।
मगसिर शुक्ला एक, तप लक्ष्मी को वरने।।
पालकि रविप्रभ बैठ, पुष्पकवन में पहुँचे।
जजूँ आज शिर टेक, तपकल्याणक हित मैं।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाप्रतिपदायां श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ला दूज, सायं पुष्पक वन में।
घाति कर्म से छूट, नागवृक्ष के तल में।।
केवल रवि प्रगटाय, समवसरण में तिष्ठे।
स्वात्म निधी मिल जाय, इसीलिए हम पूजें।।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाद्वितीयायां श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों शुक्ला आठ, सायं सहस मुनी ले।
सकल कर्म को काट, गिरि सम्मेद शिखर से।।
पुष्पदंत भगवंत, सिद्धिरमा के स्वामी।
जजत मिले भव अंत, बनूँ स्वात्म विश्रामी।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाअष्टम्यां श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

पुष्पदंत जिननाथ की, भक्ति भवोदधि सेतु।
पूर्ण अर्घ्य अर्पण करूँ, पूजा शिवसुख हेतु।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ 108 अर्घ्य

–सोरठा–

ज्ञान चेतनारूप, परमेष्ठी चिद्रूप हैं।
पुष्पांजलि से पूज, सकल दुःख दारिद हरूँ।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–अनुष्टुप् छंद–

स्वामी 'त्रिकालदर्शी' हो, सभी पदार्थ देखते।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।1।।

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्शिने श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'लोकेश' माने हो, तीन लोक प्रभु कहे।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।2।।

ॐ ह्रीं लोकेशाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'लोकधाता' तुम्हीं माने, तीनों जगत् पोषते।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।3।।

ॐ ह्रीं लोकधात्रे श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'दृढव्रत' व्रतों में, स्थैर्य धारते।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।4।।

ॐ ह्रीं दृढव्रताय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वलोकातिग' स्वामिन्! सभी जग में श्रेष्ठ हो।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वलोकातिगाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा के योग्य हो स्वामिन्! 'पूज्य' माने सभी सदा।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।6।।

ॐ ह्रीं पूज्याय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभीष्ट में पहुँचाते, 'सर्वलोकैककसारथी'।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वलोकैककसारथये श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राचीन सबमें ही हो, माने 'पुराण' आपको।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।8।।

ॐ ह्रीं पुराणाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणों को श्रेष्ठ आत्मा के, पाया 'पुरुष' आप हैं।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।9।।

ॐ ह्रीं पुरुषाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व प्रथम होने से 'पूर्व' माने तुम्हीं प्रभो!।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंग पूर्वादि विस्तारे, 'कृतपूर्वांग-विस्तरः'।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।11।।

ॐ ह्रीं कृतपूर्वांगविस्तराय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों में मुख्य होने से, 'आदिदेव' तुम्हीं कहे।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।12।।

ॐ ह्रीं आदिदेवाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुराणाद्य' प्रभो! माने, प्राचीन धर्म को कहा।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।13।।

ॐ ह्रीं पुराणाद्याय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरुदेव' तुम्हीं माने, श्रेष्ठ देव महान हो।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।14।।

ॐ ह्रीं पुरुदेवाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों के देव होने से, तुम्हीं हो 'अधिदेवता'।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।15।।

ॐ ह्रीं अधिदेवतायै श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगमुख्य' युगादी के, मार्गदर्शक आप हैं।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।16।।

ॐ ह्रीं युगमुख्याय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगज्येष्ठ' कहे स्वामी, तीर्थंकर जग श्रेष्ठ हो।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।17।।

ॐ ह्रीं युगज्येष्ठाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगादिस्थितिदेशक' सम, दिव्यध्वनि आपकी।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।18।।

ॐ ह्रीं युगादिस्थितिदेशकाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

'कल्याणवर्ण' कांती से, सुवर्ण सम हो तुम्हीं।।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।19।।

ॐ ह्रीं कल्याणवर्णाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'कल्याण' भव्यों के, हितकर्ता प्रसिद्ध हो।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।20।।

ॐ ह्रीं कल्याणाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कल्य' नीरोग होने से, तत्पर मुक्ति हेतु हो।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।21।।

ॐ ह्रीं कल्याय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण हितकारी हैं, अतः 'कल्याणलक्षणः'।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।22।।

ॐ ह्रीं कल्याणलक्षणाय श्री पुष्पदंतनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कल्याणप्रकृती' स्वामी, हो कल्याण स्वभाव ही।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।23।।

ॐ ह्रीं कल्याणप्रकृतये श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णवत् प्रभु दीप्तात्मा, 'दीप्रकल्याणआतमा'।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।24।।

ॐ ह्रीं दीप्रकल्याणात्मने श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विकल्मष' तुम्हीं स्वामी, कालिमाकर्म शून्य हो।
पुष्पदंत! तुम्हें पूजूं, आत्म सौख्य सुधा मिले।।25।।

ॐ ह्रीं विकल्मषाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चंपकमाला छंद–

कर्म कलंकादी निरमुक्ता, हो 'विकलंका' कर्म हरो मे।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।26।।

ॐ ह्रीं विकलंकाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देह कला से हीन रहे हो ,नाथ! 'कलातीते' जग में हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।27।।

ॐ ह्रीं कलातीताय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'कलिलघ्न' तुम्हीं अघ हीना, पाप हमारे क्षालन कीजे।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।28।।

ॐ ह्रीं कलिलघ्नाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'कलाधर' सर्व कला से, पूर्ण तुम्हीं हो सर्व गुणों से।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।29।।

ॐ ह्रीं कलाधराय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवदेव' हो तीन जगत् में, नाथ! सुदेवों के अधिदेवा।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।30।।

ॐ ह्रीं देवदेवाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'जगन्नाथा' जगस्वामी, जन्म मरण के दुःख हरोगे।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।31।।
ॐ ह्रीं जगन्नाथाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'जगद्बंधू' भवि बंधू, भव्यजनों के पूर्ण हितैषी।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।32।।
ॐ ह्रीं जगद्बंधवे श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'जगद्विभु' तीन भुवन में, पालक हो सामर्थ्य समेता।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।33।।
ॐ ह्रीं जगद्विभवे श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगत्' हितैषी तीन जगत में, सर्वजनों को सौख्य दिया है।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।34।।
ॐ ह्रीं जगद्धितैषिणे श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप कहे 'लोकज्ञ' जगत् को, जान लिया है पूर्ण तरह से।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।35।।
ॐ ह्रीं लोकज्ञाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वग' तीनों लोक सभी में, व्याप्त हुये ये ज्ञान किरण से।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।36।।
ॐ ह्रीं सर्वगाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'जगदग्रज' ज्येष्ठ जगत में, सर्व दुखों को दूर करोगे।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।37।।
ॐ ह्रीं जगदग्रजाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'चराचरगुरु' कहे हो, स्थावर त्रस के पालक भी हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।38।।
ॐ ह्रीं चराचरगुरवे श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गोप्य' मुनी रक्खें मन में ही, नाथ! करो रक्षा अब मेरी।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।39।।
ॐ ह्रीं गोप्याय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु 'गूढ़ात्मा' तुम आत्मा, गोचर इन्द्री के नहिं होती।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।40।।
ॐ ह्रीं गूढ़ात्मने श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गूढ़ सुगोचर' गूढ़ तुम्हीं हो, योगिजनों के गम्य तुम्हीं हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।41।।
ॐ ह्रीं गूढ़गोचराय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे प्रभु 'सद्योजात' कहे हो, तत्क्षण जन्में रुप रहे हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।42।।
ॐ ह्रीं सद्योजाताय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'प्रकाशात्मा' मुनि मानें, ज्ञान सुज्योती रूप बखानें।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।43।।
ॐ ह्रीं प्रकाशात्मने श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'ज्वलज्ज्वलनसप्रभ' हो, अग्निप्रभा सी कांति धरे हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।44।।
ॐ ह्रीं ज्वलज्ज्वलनसप्रभाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रविव्रत् 'आदित्यवरण' स्वामी, हो प्रभु तेजस्वी जग नामी।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।45।।
ॐ ह्रीं आदित्यवर्णाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण छवी 'भर्माभ' कहाये, देह दिपे भास्वत् शरमाये।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।46।।
ॐ ह्रीं भर्माभाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुप्रभ' शोभे कांति तुम्हारी, सूर्य शशी क्रोड़ों लजते हैं।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।47।।
ॐ ह्रीं सुप्रभाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'कनकप्रभ' स्वर्ण प्रभा सी, कांति दिखे उत्तुंग तनु हो।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।48।।
ॐ ह्रीं कनकप्रभाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'सुवर्णवर्ण' सुर गायें, देह सुवर्णी दीप्ति धराये।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।49।।

ॐ ह्रीं सुवर्णवर्णाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप प्रभो! 'रुक्माभ' कहाये, स्वर्ण छवी सी दीप्ति करो मे।
पूजन करते सौख्य मिलेगा, आतम ज्ञानानंद बढ़ेगा।।50।।

ॐ ह्रीं रुक्माभाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–मंदाक्रांता छंद–

'सूर्यकोटिसमप्रभ' विभो! क्रोड़ सूरज लजाते।
दीप्ती ऐसी तुम तनु विषे आत्मदीप्ती अनोखी।।
पूजूँ भक्ती से नित प्रभो! सर्वव्याधी निवारो।
ज्ञानज्योति प्रगटित करो मोहशत्रू भगाके।।51।।

ॐ ह्रीं सूर्यकोटिसमप्रभाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप्ते सोने सदृश 'तपनीयनिभ' दीप्ती धरे हो।
कर्मों का भी मल सब हटा स्वात्म निर्मल किया है।।पूजूँ.।।52।।

ॐ ह्रीं तपनीयनिभाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊँचीदेही धर कर विभो! 'तुंग' माने गये हो।
ऊँचे भावों सहित तुमही मोक्ष प्रासाद पाया।।पूजूँ.।।53।।

ॐ ह्रीं तुंगाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बालार्काभो' प्रभु तनु धरा ऊगते सूर्य कांती।
मेरी आत्मा सुवरण करो कर्म पंकील[1]धो दो।।पूजूँ.।।54।।

ॐ ह्रीं बालार्काभाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा शुद्ध्या 'अनलप्रभ' हो अग्नि कांती सदृश हो।
मेरी आत्मा निरमल करो श्रेष्ठ तप से तपाके।।पूजूँ.।।55।।

ॐ ह्रीं अनलप्रभाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संध्यालाली सदृश छवि है नाथ!'संध्याभ्रबभ्रू'।
भक्ती लाली शुभ तम रहे नाथ मेरे हृदय में।।पूजूँ.।।56।।

ॐ ह्रीं संध्याभ्रबभ्रवे श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. कीचड़

आत्मा निर्मल सुवरण तनू आप 'हेमाभ' मानें।
रागादी को हृदयगृह से दूर कीजे अभी ही।।पूजूँ.।।57।।

ॐ ह्रीं हेमाभाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तप्ताचामीकरप्रभ' तपे स्वर्ण जैसी प्रभा है।
मेरी आत्मा अतिशय धुला कर्म से मुक्त होवे।।पूजूँ.।।58।।

ॐ ह्रीं तप्तचामीकरप्रभाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धात्मा हो जिनवृषभ! 'निष्टप्तकनकच्छाय' हो।
कांती धारी अद्भुत महादीप्त त्रैलोक्य स्वामी।।पूजूँ.।।59।।

ॐ ह्रीं निष्टप्तकनकच्छायाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देदीप्यात्मा जिनवर 'कनत्कांचनासन्निभ' देही।
कैवल्यात्मा चमचम करे नाथ! कीजे अबे ही।।पूजूँ.।।60।।

ॐ ह्रीं कनत्कांचनसन्निभाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तीकांतावर प्रभु 'हिरण्यवर्ण' इंद्रादि गायें।
दीजे शक्ती निजसम खिले चित्तपंकज सुहाये।।पूजूँ.।।61।।

ॐ ह्रीं हिरण्यवर्णाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोने जैसी छवि तुमहिं 'स्वर्णाभ' साधु जनों में।
व्याधी हीना मुझ तनु बने रत्नत्रै साध लूँ मैं।।पूजूँ.।।62।।

ॐ ह्रीं स्वर्णाभाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों को भी करत शुचि भो! 'शांतकुंभनिभप्रभ' हो।
मेरी आत्मा स्वपर विद हो ज्ञानज्योति जला दो।।पूजूँ.।।63।।

ॐ ह्रीं शांतकुंभनिभप्रभाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर सोने सदृश तनु है आप 'द्युम्नाभ' स्वामी।
दीजे सिद्धी निजसुख मिले ना पुनर्भव कभी हो।।पूजूँ.।।64।।

ॐ ह्रीं द्युम्नाभाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्में जैसे विकृति रहिते 'जातरूपाभ' स्वामी।
रागादी मुझ विकृति हरिये दीजिये मुक्ति लक्ष्मी।।

पूजूँ भक्ती से नित प्रभो! सर्वव्याधी निवारो।
ज्ञानज्योति प्रगटित करो मोहशत्रू भगाके।।65।।

ॐ ह्रीं जातरूपाभाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तप्तजाम्बुनदद्युति' प्रभो! श्रेष्ठ स्वर्णिम शरीरी।
दीजे शक्ती द्विदश तपसे आत्म शुद्धी करूँ मैं।।पूजूँ.।।66।।

ॐ ह्रीं तप्तजाम्बूनदद्युतये श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धोये उज्ज्वल कनक से हो पाप क्षालो हमारे।
दीपे आत्मा जिनवर 'सुधौतकलधौतश्री' हो।।पूजूँ.।।67।।

ॐ ह्रीं सुधौतकलधौतश्रिये श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

दीपे देही जिनरवि 'प्रदीप्त' आप लोकाग्र राजें।
जो भी पूजें सकल दुख भी नाशते सौख्य देते।।पूजूँ.।।68।।

ॐ ह्रीं प्रदीप्ताय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी हो 'हाटकद्युति' तनू स्वर्ण दीप्ती लजाते।
मैं भी ध्याऊँ हृदय धरके आपको शीश नाऊँ।।पूजूँ.।।69।।

ॐ ह्रीं हाटकद्युतये श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी सौ भी सुरपति जजें आप 'शिष्टेष्ट' मानें।
प्रीती से शिष्ट जन सब तुम्हें इष्ट भगवान् मानें।।पूजूँ.।।70।।

ॐ ह्रीं शिष्टेष्टाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्टी कर्ता त्रिभुवन जनों आप 'पुष्टिद' कहे हो।
स्वामिन्! पोषो दुखित मुझको पास आया इसी से।।पूजूँ.।।71।।

ॐ ह्रीं पुष्टिदाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमौदारिक तनुधर प्रभो! 'पुष्ट' हो सौख्यभृत हो।
मेरी पुष्टी तुरत करिये रोग शोकादि हरके।।पूजूँ.।।72।।

ॐ ह्रीं पुष्टाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानी युगपत् तुम्हीं लोक को जानते हो।
कर्मों का मुझ तुरत क्षय हो 'स्पष्ट' स्वामी तुम्हीं से।।पूजूँ.।।73।।

ॐ ह्रीं स्पष्टाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वाणी प्रभु की विशद अतिशै 'स्पष्टाक्षर' इसी से।
मेरी वाणी हितकर करो दिव्यवाणी बने भी।।
पूजूँ भक्ती से नित प्रभो! सर्वव्याधी निवारो।
ज्ञानज्योति प्रगटित करो मोहशत्रू भगाके।।74।।

ॐ ह्रीं स्पष्टाक्षराय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सामर्थ्यात्मा प्रभु 'क्षम' तुम्हीं मोह शत्रू हना है।
शत्रू मृत्यू अति दुख दिया नाथ! नाशो इसे ही।।पूजूँ.।।75।।

ॐ ह्रीं क्षमाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–आर्या छंद–

कर्म शत्रु को मारा, इसीलिये 'शत्रुघ्न' सुरेंद्र कहें।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।76।।

ॐ ह्रीं शत्रुघ्नाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अप्रतिघ' तुम्हीं हो, शत्रु न कोई रहा यहाँ जग में।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।77।।

ॐ ह्रीं अप्रतिघाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अमोघ' हो नित ही, स्वयं सफल हो किया सफल सबको।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।78।।

ॐ ह्रीं अमोघाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रशास्ता' तुम हो, सर्वोत्तम उपदेश दिया तुमने।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।79।।

ॐ ह्रीं प्रशास्त्रे श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'शासिता' तुमही, रक्षा करते सदैव भक्तों की।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।80।।

ॐ ह्रीं शासित्रे श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वभू' स्वयं जन्मे हो, मात पिता बस निमित बने सच में।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।81।।

ॐ ह्रीं स्वभुवे श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतिनिष्ठ' प्रभु तुम हो, पूर्ण शांति को पाया पाप हना।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।82।।
ॐ ह्रीं शांतिनिष्ठाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'मुनिज्येष्ठ' कहाते, गणधर मुनि में बड़े तुम्हीं माने।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।83।।
ॐ ह्रीं मुनिज्येष्ठाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शिवताति' जगत में, सब कल्याण परंपरा देते।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।84।।
ॐ ह्रीं शिवतातये श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिवप्रद' नाथ तुम्हीं हो, भविजन को सब सुख शिवसुख भी देते।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।85।।
ॐ ह्रीं शिवप्रदाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांतिद' नाथ सभी को, शांति दिया है सुख भरपूर दिया।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।86।।
ॐ ह्रीं शांतिदाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'शांतिकृत्' जग में, शांति करो मुझको भी शांति करो।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।87।।
ॐ ह्रीं शांतिकृते श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'शांति' हो जगमें, त्रिभुवन में भी शांति करो भगवन्।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।88।।
ॐ ह्रीं शांतये श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कांतिमान्' प्रभु मानें, सर्व कांतियुत सभामध्य तेजस्वी।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।89।।
ॐ ह्रीं कांतिमते श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कामितप्रद' भगवंता, भक्तों के मनरथ पूर्ण किया है।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।90।।
ॐ ह्रीं कामितप्रदाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रेयोनिधि' जिनराजा, भविजन के हित तुम सब सुख के दाता।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।91।।
ॐ ह्रीं श्रेयोनिधये श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अधिष्ठान' तुमही हो, त्रिभुवन में दयाधर्म आधारा।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।92।।
ॐ ह्रीं अधिष्ठानाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अप्रतिष्ठ' हो भगवन्! परकृत बिना प्रतिष्ठा के पूजित हो।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।93।।
ॐ ह्रीं अप्रतिष्ठाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रतिष्ठित' जग में, नर सुरगण में महायशस्वी हो।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।94।।
ॐ ह्रीं प्रतिष्ठिताय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुस्थिर' त्रिभुवन में, अतिशय थिरता मिली तुम्हें निज में।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।95।।
ॐ ह्रीं सुस्थिराय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ ! तुम्हीं 'स्थावर' हो, समवसरण में गमन रहित राजें।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।96।।
ॐ ह्रीं स्थावराय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'स्थाणु' कहाये, अचल रूपधर यहीं विराजे हो।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।97।।
ॐ ह्रीं स्थाणवे श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रथीयान्' प्रभु मानें, अतिशय विस्तृत कहें सुरासुर भी।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।98।।
ॐ ह्रीं प्रथीयसे श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भगवन्! 'प्रथित' तुम्हीं हो, त्रिभुवन में भी प्रसिद्ध अतिशायी।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।99।।
ॐ ह्रीं प्रथिताय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पृथु' ज्ञानादि गुणों से, गणि मुनिगण में महान हो प्रभुजी।
पुष्पदंत प्रभु पूजूँ, पाप हरो शुभ करो स्वामी।।100।।

ॐ ह्रीं पृथवे श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–तोटक छंद –

प्रभु 'सौम्य' तुम्हीं शशि सुंदर हो।
तुम गावत गीत पुरंदर हो।।
तुम नाम सुमंत्र जपूँ नित ही।
भव वारिध पार करो अब ही।।101।।

ॐ ह्रीं सौम्याय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुखदं' सब जीव शुभंकर हो।
सुखदायि जिनेश्वर आपहि हो।।तुम.।।102।।

ॐ ह्रीं सुखदाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुहितं' प्रभु सर्वहितंकर हो।
मुझको निज दास करो शिव हो।।तुम.।।103।।

ॐ ह्रीं सुहिताय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुहृत्' सबके मितु हो।
मुझ चित्त बसों सब ही वश हो।।तुम.।।104।।

ॐ ह्रीं सुहृदे श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सुगुप्त' सुरक्षित हो।
तुम भक्त सभी अरि रक्षित हों।।तुम.।।105।।

ॐ ह्रीं सुगुप्ताय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'गुप्तिभृता' त्रयगुप्ति धरी।
तुम भक्ति किया मुझ धन्य घरी।।तुम.।।106।।

ॐ ह्रीं गुप्तिभृते श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'गोप्ता' रक्षक हो जग के।
मुझ पे अब नाथ कृपा कर दे।।तुम.।।107।।

ॐ ह्रीं गोप्त्रे श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'लोकअध्यक्ष' त्रिलोकपती।
मुझ व्याधि उपाधि हरो जलदी।।तुम.।।108।।

ॐ ह्रीं लोकाध्यक्षाय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–शंभु छंद–

प्रभु त्रिकालदर्शी से इक सौ आठ मंत्र अतिशायी हैं।
गणधर मुनिगण चक्रवर्ति भी नाम जपें सुखदायी हैं।।
सुरपति खगपति पूजन करते वदंन कर शिर नाते हैं।
हम भी पूजें अर्घ चढ़ाकर निज समकित गुण पाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं त्रिकालदर्श्यादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रसमन्विताय श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

–सोरठा –

त्रिभुवन तिलक महान, पुष्पदंत तीर्थेश हैं।
नित्य करूँ गुणगान, पाऊँ भेद विज्ञान मैं।।1।।

–रोला छंद –

अहो! जिनेश्वर देव! सोलह भावन भाया।
प्रकृती अतिशय पुण्य, तीर्थंकर उपजाया।।
पंचकल्याणक ईश, हो असंख्य जन तारे।
त्रिभुवन पति नत शीश, कर्म कलंक निवारें।।2।।

नाममंत्र भी आप, सर्वमनोरथ पूरे।
जो नित करते जाप, सर्व विघ्न को चूरें।।
तुम वंदत तत्काल, रोग समूल हरे हैं।
पूजन करके भव्य, शोक निमूल करे हैं।।3।।

इन्द्रिय बल उच्छ्वास, आयू प्राण कहाते।
ये पुद्गल परसंग, इनको जीव धराते।।
ये व्यवहारिक प्राण, इन बिन मरण कहावे।
सब संसारी जीव, इनसे जन्म धरावें।।4।।

निश्चयनय से एक, प्राण चेतना जाना।
इनका मरण न होय, यह निश्चय मन ठाना।।
यही प्राण मुझ पास, शाश्वत काल रहेगा।
शुद्ध चेतना प्राण, सर्व शरीर दहेगा।।5।।

कब ऐसी गति होय, पुद्गल प्राण नशाऊँ।
ज्ञानदर्शमय शुद्ध, प्राण चेतना पाऊँ।।
ज्ञान चेतना पूर्ण, कर तन्मय हो जाऊँ।
दश प्राणों को नाश, ज्ञानमती बन जाऊँ।।6।।

गुण अनंत भगवंत, तब हों प्रगट हमारे।
जब हो तनु का अंत, यह जिनवचन उचारें।।
समवसरण में आप, दिव्यध्वनी से जन को।
करते हैं निष्पाप, नमूँ नमूँ नित तुम को।।7।।

श्रीविदर्भमुनि आदि, अट्ठासी गणधर थे।
दोय लाख मुनि नाथ, नग्न दिगम्बर गुरु थे।।
घोषार्या सुप्रधान, आर्यिकाओं की गणिनी।
त्रय लख अस्सी सहस, आर्यिकाएँ गुणश्रमणी।।8।।

दोय लाख जिनभक्त, श्रावक अणुव्रती थे।
पाँच लाख सम्यक्त्व, सहित श्राविका तिष्ठे।।
जिन भक्ती वर तीर्थ, उसमें स्नान किया था।
भव अनंत के पाप, धो मन शुद्ध किया था।।9।।

चार शतक कर तुंग, चंद्र सदृश तनु सुंदर।
दोय लाख पूर्वायु, वर्ष आयु थी मनहर।।

चिन्ह मगर से नाथ, सब भविजन पहचाने।
नमूँ नमूँ नत माथ, गुरुओं के गुरु माने।।10।।

–दोहा –

ध्यानामृत पीकर भये, मृत्युजंय प्रभु आप।
धन्य घड़ी प्रभु भक्ति की, जजत मिटे भव ताप।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

–शम्भु छंद–

श्री पुष्पदंतजिनवर विधान, जो भक्तिभाव से करते हैं।
वे रोग शोक दुःख संकटहर, नित सुख संपत्ती लभते हैं।।
क्रम से स्वर्गों के सौख्य पाय, निज आत्म सुधारस चखते हैं।
कैवल्य ज्ञानमति किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

बड़ी जयमाला

–दोहा–

घाति चतुष्टय घातकर, प्रभु तुम हुए कृतार्थ।
नव केवल लब्धी रमा, रमणी किया सनाथ।।1।।

चाल–हे दीनबन्धु श्रीपति.....

प्रभु दर्श मोहनीय को निर्मूल किया है।
सम्यक्त्व क्षायिकाख्य को परिपूर्ण किया है।।
चारित्रमोह का विनाश आपने किया।
क्षायिक चारित्र नाम यथाख्यात को लिया।।2।।

संपूर्ण ज्ञानावरण का जब आप क्षय किया।
कैवल्य ज्ञान से त्रिलोक जान सब लिया।।
प्रभु दर्शनावरण के क्षय से दर्श अनन्ता।
सब लोक औ अलोक को लखते हो तुरन्ता।।3।।

दानांतराय नाश के अनंत प्राणि को।
देते अभय उपदेश तुम कैवल्य दान जो।।
लाभांतराय का समस्त नाश जब किया।
क्षायिक अनंत लाभ का तब लाभ प्रभु लिया।।4।।

जिससे परम शुभ सूक्ष्म दिव्य नंत वर्गणा।
पुद्गलमयी प्रत्येक समय पावते घना।।
जिससे न कवलाहार हो फिर भी तनू रहे।
कुछ हीन पूर्व कोटि वर्ष तक टिका रहे।।5।।

भोगांतराय नाश के अतिशय सुभोग हैं।
सुरपुष्पवृष्टि गंध उदक वृष्टि शोभ हैं।।
पद के तले वर पद्म रचें देवगण सदा।
सौगंध्य शीत पवन आदि सौख्य शर्मदा।।6।।

उपभोग अंतराय का क्षय हो गया जभी।
प्रभु सातिशय उपभोग को भी पा लिया तभी।।
सिंहासनादि छत्र चमर तरू अशोक हैं।
सुरदुंदुभी भाचक्र दिव्यध्वनि मनोज्ञ हैं।।7।।

वीर्यान्तराय नाश से आनन्त्य वीर्य हैं।
होते न कभी श्रांत आप महावीर हैं।।
प्रभु चार घाति नाश के नव लब्धि पा लिया।
आनन्त्य ज्ञान आदि चतुष्टय प्रमुख किया।।8।।

हे नाथ! आप ही तो सकल इंद्र वंद्य हैं।
इस भू पे अतः आप ही तो धन्य धन्य हैं।।
सम्पूर्ण अतिशयों के आप ही तो सद्म हैं।
इस हेतु सभी पूजते तुम पाद पद्म हैं।।9।।

प्रभु आपके माहात्म्य से असमय में बगीचे।
सब ऋतु के फूल फल से वे फूले फले दिखें।।
रज आदि दूर करती सुखद वायु चले है।
सब जीव वैर छोड़ के आपस में मिले हैं।।10।।

दर्पण के सदृश भूमि स्वच्छ रत्नमय हुई।
गंधोद की वर्षा भी मेघ देवकृत हुई।।
शाल्यादि खेत भी फलों के भार से झुके।
सब जीव भी आनन्द से तो झूम ही उठे।।11।।

शीतल पवन वायुकुमार देव चलाते।
सरवर कुँआ भी स्वच्छ जल से पूर्ण हो जाते।।
उल्कादि धूम रहित गगन स्वच्छ सही है।
जब जीवों को रोगादि की बाधायें नहीं हैं।।12।।

सर्वाण्हयक्ष शिर पे धर्मचक्र को धरें।
चारों तरफ के चक्र दिव्य रश्मियाँ धरें।।

शुभ श्रीविहार के समय तुम पाद के तले।
सुरकृत सुगंधि युक्त भी सुवरण कमल खिलें।।13।।

ये देव रचित तेरहों अतिशय महान हैं।
जो आपके अनंत गुणों में प्रधान हैं।।
कैवल्यज्ञान उदित हो जिस वृक्ष के नीचे।
वो ही अशोक वृक्ष कहाता है तभी से।।14।।

जो आपका आश्रय सदा लेते हैं भुवन में।
उनके कहो क्यों शोक रहेगा कभी मन में।।
इस हेतु से तुम पाद का आश्रय लिया मैंने।
निज 'ज्ञानमती' हेतु ही विनती किया मैंने।।15।।

-दोहा-

भक्तों के वत्सल तुम्हीं, करुणासिंधु जिनेश।
करो पूर्ण यह याचना, फेर न माँगू लेश।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शम्भु छंद–

श्री पुष्पदंतजिनवर विधान, जो भक्तिभाव से करते हैं।
वे रोग शोक दुःख संकटहर, नित सुख संपत्ती लभते हैं।।
क्रम से स्वर्गों के सौख्य पाय, निज आत्म सुधारस चखते हैं।
कैवल्य ज्ञानमति किरणों से, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–नरेन्द्र छंद –

तीर्थंकर के चरण कमल में, झुक झुक शीश नमाऊँ।
सरस्वती का वंदन करके, त्रिविध साधु गुण गाऊँ।।
चौबीसों तीर्थंकर जिनवर, मंगल कर्ता जग में।
इनकी भक्ती से विधान यह, रचा सौख्यकर मैंने।।1।।

मूल संघ में कुंदकुंद आम्नाय, प्रसिद्ध हुआ है।
गच्छ सरस्वति बलात्कार गण, इसमें मान्य हुआ है।।
श्री चारित्रचक्रवर्ती, आचार्य शांतिसागर जी।
इनके प्रथम शिष्य पट्टाधिप, गुरू वीरसागर जी।।2।।

मुझे आर्यिका दीक्षा देकर, ज्ञानमती कर जग में।
ज्ञानामृत कण से पावन कर, सार्थक नाम दिया मे।।
तीर्थंकर भक्ती प्रसाद से, देव शास्त्र गुरु भक्ती।
मिली आत्मनिधि त्रिभुवन उत्तम, प्राप्त करन की शक्ती।।3।।

पुष्पदंत प्रभु जन्मभूमि काकंदी तीर्थ सु उत्तम।
श्री रवीन्द्रकीर्ति प्रयास से, जीर्णोद्धार अनूपम।।
पुष्पदंत जिनवर विधान यह, तीर्थंकर भक्ती से।
पूर्ण किया कैवल्य तिथी में, करो भव्य भक्ती से।।4।।

वीरनिवृति संवत् पचीस सौ, कार्तिक सुदि चालिस में।
द्वितिया तिथि को पूर्ण किया यह, श्रेष्ठ विधान तभी मैं।
महावीर शासन इस जग में, जब तक मंगलमय हो।
तब तक गणिनी ज्ञानमती कृत, विधान भवि सुखप्रद हो।।5।।

।।इति शं भूयात्।।

पूजा नं. ३

काकन्दी तीर्थ पूजा

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

(स्थापना)

तर्ज-आओ बच्चों.....

चलो चलें काकन्दी नगरी, पुष्पदन्त को नमन करें।
जन्मभूमि की पूजन करके, अपना पावन जनम करें।।
तीरथ को नमन, तीरथ को नमन-2।।टेक.।।

चौबिस तीर्थंकर में से, श्रीपुष्पदन्त नवमें प्रभु हैं।
उनसे काकन्दी नगरी ने, प्राप्त किया वैभव सब है।।
इन्द्र मनुज भी आकर जिस, तीरथ को शत-शत नमन करें।
जन्मभूमि की पूजन करके, अपना पावन जनम करें।।
तीरथ को नमन, तीरथ को नमन-2।।1।।

आह्वानन स्थापन सन्निधिकरण, विधी हम करते हैं।
पूजन में काकन्दी नगरी, का स्थापन करते हैं।।
आत्मशक्ति प्रगटाने हेतु, तीर्थक्षेत्र का यजन करें।
जन्मभूमि की पूजन करके, अपना पावन जनम करें।।
तीरथ को नमन, तीरथ को नमन-2।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (स्रग्विणी छंद)

स्वर्ण भृंगार में क्षीर सम नीर ले।
धार डालूँ तो मिट जाय भव पीर है।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस के चन्दन मलयगिरि का लाया प्रभो।
भव का संताप मैंने नशाया विभो।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमि काकन्दीतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शालि के पुंज से नाथ पूजा करूँ।
पूर्ण आनंदमय आत्मसुख को वरूँ।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमि काकन्दीतीर्थक्षेत्राय अक्षय-पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मोगरा जूही चंपा चमेली कुसुम ।
तीर्थ पद में चढ़ा कर लहूँ पद विमल।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरियां लाडुओं से भरा थाल है।
रोग क्षुध नाश हेतू चढ़ाऊँ तुम्हें।।

तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के दीपक की ज्योति जलाई प्रभो।
स्वर्ण थाली में आरति सजाई प्रभो।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप को अग्निघट में जलाऊँ प्रभो।
कर्म की धूम्र चहुँदिश उड़ाऊँ प्रभो।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अनंनास नींबू नरंगी लिया।
मोक्षफल आश से नाथ अर्पित किया।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुख रंच ना।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि युत अर्घ्य अर्पण करूँ।
''चन्दना'' अर्घ्य प्रभु पद समर्पण करूँ।।
तीर्थ काकन्दि की जो करे अर्चना।
जन्म होवे सफल उनको दुःख रंच ना।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर–छन्द

गंगानदी के नीर से, त्रयधार करूँ मैं।
त्रयरत्न प्राप्ति हेतु, शांतिधार करूँ मैं।।10।।

शांतये शांतिधारा

नाना तरह के पुष्प, अंजुली में भर लिया।
पुष्पांजली कर मैंने, आत्मसौख्य वर लिया।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

काकंदी तीर्थक्षेत्र के अर्घ्य (शेर छन्द)

फाल्गुन वदी नवमी जहाँ प्रभु गर्भ में आये।
काकन्दी में जयरामा माँ को स्वप्न दिखाये।।
उस गर्भकल्याणक से पूज्य भूमि को वन्दूँ।
काकन्दी को मैं अर्घ्य चढ़ा दुःख को खंडूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथगर्भकल्याणकपवित्रकाकन्दी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर सुदी एकम को जन्म पुष्पदंत का।
काकन्दी में हुआ था जब त्रैलोक्य धन्य था।।
उस जन्मकल्याणक पवित्र तीर्थ को नमूँ।
कर अर्घ्य समर्पण प्रभू तीर्थेश को प्रणमूँ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथजन्मकल्याणकपवित्रकाकन्दीतीर्थ-क्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

मगशिर सुदी एकम जहाँ वैराग्य हुआ था।
श्री पुष्पदंत जिनवर ने त्याग लिया था।।
काकन्दी का वह पुष्पक वन हो गया पावन।
उस तीर्थ को ही मेरा यह अर्घ्य समर्पण।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रकाकन्दी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदी दुतिया को जहाँ ज्ञान हुआ था।
जिनवर समवसरण का निर्माण हुआ था।।
काकन्दि उस पवित्र धरा को नमन करूँ।
मैं अर्घ्य चढ़ा घाति कर्म को हनन करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्र-काकन्दीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (शेरछंद)

श्रीपुष्पदंत जिनवर के चार कल्याणक।
सम्मेदगिरि से मोक्ष गये उनको नमूं नित।।
उन गर्भ जन्म तप व ज्ञान भूमि को जजूँ।
काकन्दि को पूर्णार्घ्य दे निज आत्मा भजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदंतनाथगर्भजन्मदीक्षाज्ञानचतुःकल्याणक-पवित्रकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं काकन्दीजन्मभूमिपवित्रीकृत श्रीपुष्पदंतनाथजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

(गीताछन्द)

जय तीर्थ काकन्दी जगत में, जन्मभूमि जिनेन्द्र की।
जय चार कल्याणक धरा वह, पुष्पदन्त जिनेन्द्र की।।
जय मात जयरामा व पितु, सुग्रीव का शासन जहाँ।
जयवंत हो त्रैलोक्यपूज्य, जिनेन्द्र का शासन जहाँ।।1।।

शुभ स्वर्ग प्राणत का सुखी, जीवन व्यतीत किया प्रभो।
प्रकृती जो तीर्थंकर बंधी थी, उसकी थी महिमा प्रभो।।
माँ के गरभ में आने से, छह माह पहले से हुई।
काकन्दि नगरी में धनद, द्वारा रतन वर्षा हुई।।2।।

रोमांच होता है हृदय में, जन्म का क्षण सोचकर।
जब स्वर्ग पूरा आ गया था, इस धरा पर भक्तिवश।।
सौधर्म सुरपति की शची, इन्द्राणी का सौभाग्य था।
जिसने प्रसूतिगृह में जा, पहले किया प्रभुदर्श था।।3।।

मायामयी बालक को रख, माँ को किया निद्रामगन।
गोदी में लाकर जिनशिशू को, कर लिया जीवन सफल।।
फिर इन्द्र ने जिनराज दर्शन, हेतु नेत्र सहस किया।।
मेरू शिखर पर जा प्रभू के, जन्म का उत्सव किया।।4।।

भारत की ही धरती का यह, इतिहास पौराणिक रहा।
त्रेसठ शलाका पुरुषों का, जिसने कथानक है कहा।।
जहाँ विश्वमैत्री का सदा, संदेश देते ऋषि मुनी।
उस देश में ही जिनवरों के, जन्म की महिमा सुनी।।5।।

तीर्थंकरों की श्रेणि में, श्रीपुष्पदंत नवम कहे।
उनके जनम से धन्य, काकन्दीपुरी के नृप रहे।।
बीते करोड़ों वर्ष फिर भी, वह धरा तो पूज्य है।
पूजी सदा जाती रहेगी, उस धरा की धूल है।।6।।

जहाँ देख उल्कापात प्रभु, वैरागि बनकर चल दिये।
साम्राज्य और कुटुम्ब को, समझा क्षणिक सब तज दिये।।
दीक्षा लिया तप कर जहाँ, कैवल्यज्ञान प्रगट किया।
उस पुण्यथान जिनेन्द्र भूमी, का सदा अर्चन किया।।7।।

जयमाल में पूर्णार्घ्य का, यह थाल अर्पित कर दिया।
गुणमाल में निज आत्म का, उद्गार प्रगटित कर दिया।।
स्वीकार कर लो द्रव्य मेरा, तीर्थ अर्चन कर रहा।
भंडार भर दो ''चन्दनामति'', आत्मचिंतन चल रहा।।8।।

-दोहा-

पुष्पदन्त जन्मस्थली, काकन्दी शुभ तीर्थ।
अर्घ्य समर्पण कर प्रभो, पाऊँ आतम तीर्थ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपुष्पदन्तनाथजन्मभूमिकाकन्दीतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

-गीता छन्द-

जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमी को नमें।
तीर्थंकरों की चरण रज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चन्दना'' वे आएंगे।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

पुष्पदन्तनाथ भगवान की आरती

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

ॐ जय पुष्पदन्त स्वामी, प्रभु जय पुष्पदन्त स्वामी।
काकन्दी में जन्मे, त्रिभुवन में नामी।।ॐ जय.।।

फाल्गुन कृष्णा नवमी, गर्भ कल्याण हुआ। स्वामी....
जयरामा सुग्रीव मात-पितु, हर्ष महान हुआ।।ॐ जय.।।1।।

मगशिर शुक्ला एकम, जन्म कल्याणक है। स्वामी.....
तप कल्याणक से भी, यह तिथि पावन है।। ॐ जय.।।2।।

कार्तिक शुक्ला दुतिया, घातिकर्म नाशा। स्वामी.....
पुष्पकवन में केवल-ज्ञानसूर्य भासा।।ॐ जय.।।3।।

भादों शुक्ला अष्टमि, सम्मेदाचल से। स्वामी....
सकल कर्म विरहित हो, सिद्धालय पहुँचे।।ॐ जय.।।4।।

हम सब घृतदीपक ले, आरति को आए। स्वामी....
यही ''चन्दनामती''कहे, भव आरत नश जाए।।ॐ जय.।।5।।

काकन्दी तीर्थ की आरती

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-मिलो न तुम तो.....

पुष्पदंत जिन जन्मभूमि, काकन्दी तीरथ प्यारा, उतारें आरती-2।।
सुर नर वंदित तीर्थ हमारा, काकन्दी जी न्यारा, उतारें आरती।।टेक.।।

चौबीस तीर्थंकर में, पुष्पदंत स्वामी, नवमें जिनवर हैं।।हो.....
काकन्दी नगरी तब से, पावन बनी सुर नर वंदित है।।हो....
इन्द्र, मनुज भी जिस नगरी को, शत शत शीश झुकाएँ, उतारें आरती।।1।।

जयरामा माता और सुग्रीव पितु का शासन था जहाँ। हो.....
जन्में तो उस क्षण पूरा, स्वर्ग ही उतरकर आया था वहाँ।।हो....
चार-चार कल्याणक से पावन नगरी को ध्याएँ, उतारें आरती।।2।।

बीते करोड़ों वर्षों, फिर भी धरा वह पूजी जाती है। हो.....
धूल भी पवित्र उसकी, मस्तक को पावन बनाती है।। हो.....
जैनी संस्कृति की दिग्दर्शक, उस भूमी को ध्यावें, उतारें आरती।।3।।

रोमांच होता है जब, उस क्षण की बातें मन में सोच लो। हो.....
वन्दन करो उस भू को, निज मन में इच्छा इक ही तुम धरो।। हो.....
कब प्रभु जैसा पद हम पाएं, यही भावना भाएँ, उतारें आरती।।4।।

जो भव्य प्राणी ऐसी, पावन धरा को वंदन करते हैं। हो.....
क्रम-क्रम से पावें शक्ती, मानव जनम भी सार्थक करते हैं।। हो.....
आरति कर सब भव्य जीव, भव आरत से छुट जाएं, उतारें आरती।।5।।

प्राचीन इस तीरथ को विकसित किया है सबने मिल करके। हो.....
गणिनीप्रमुख श्री माता, ज्ञानमती जी से शिक्षा ले करके।। हो.....
तभी ''चन्दनामती'' तीर्थ ने, नव स्वरूप है पाया, उतारें आरती।।6।।

भजन

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज –माई रे माई.....

पुष्पदंत प्रभु जन्मभूमि में, गूँज उठी शहनाई।
सौ-सौ वर्षों बाद जहाँ, खुशियों की बेला आई।।
जिनवर पुष्पदंत की जय, उनकी जन्मभूमि की जय.।।टेक.।।

काकंदी वह पुण्यभूमि है, पुष्पदंत जहाँ जनमे।
जयरामा सुग्रीव मात-पितु हर्षे थे निज मन में।।
इन्द्रों की टोली स्वर्गों से, काकंदी में आई।
सौ-सौ वर्षों बाद जहाँ, खुशियाँ की बेला आई।।

जिनवर पुष्पदंत की जय, उनकी जन्मभूमि की जय.।।1।।

गणिनी ज्ञानमती माता की, मिली प्रेरणा सबको।
जीर्णोद्धार विकास तीर्थ का, करो कराओ भक्तों।।
इसी भावना के कारण, उत्सव की घड़ियाँ आईं।
सौ-सौ वर्षों बाद जहाँ, खुशियों की बेला आई।।

जिनवर पुष्पदंत जय, उनकी जन्मभूमि की जय.।।2।।

पुष्पदंत प्रभु शुक्र-अरिष्ट, निवारक माने जाते।
भौतिक सम्पति पाने हेतू, भक्त शरण में आते।।
इसीलिए ''चंदनामती'', उन प्रभु की महिमा गाई।
सौ-सौ वर्षों बाद जहाँ, खुशियों की बेला आई।।

जिनवर पुष्पदंत जय, उनकी जन्मभूमि की जय.।।3।।